बॉम्बे 26/2/1966 शनिचरवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :–चले आज तुम जहाँ से.....

बच्चों को ओम् शांति का अर्थ तो बताय दिया है। मैं हूँ आत्मा और मुझ आत्मा का स्वधर्म है शांत और मैं आत्मा रहने वाली हूँ निराकारी दुनिया में वा निर्वाणधाम में या वाणी से परे वानप्रस्थ में। अब यह लेसन पक्का करके जाओ। ये कौन बैठकर समझाते हैं, ये तो बच्चे जान गए हैं कि शिवबाबा और याद भी ये करते हो कि शिवबाबा को अपना रथ नहीं है। तो कभी उनको बैल भी दे देते हैं। ये ढगा भी दे देते हैं। अभी है तो ढगा ना यानी मेल है, फिमेल नहीं है। तो उन्होंने मंदिर में एक ढगा रख दिया है..। इसको कहा जाता है पूरा अज्ञान। भारतवासियों के पास मंदिर में शंकर या शिव के आगे बैल जनावर रखना, इसको कहा जाता है मूढ़मति। अभी बाप बैठ करके समझाते हैं। किसको? अपने बच्चों आत्माओं को, जिसको रूह भी कहते हैं। और ये कौन हैं? रूहों का बाप शिव। नाम बहुत ढेर हैं; परन्तु आजकल बहुत नाम नहीं लें, मूँझ पड़ेंगे। ये याद कर दो अच्छी तरह से (कि) शिवबाबा की जयन्ती भारत में मनाई जाती है। शिव है निराकारी बाबा। भारत में मनाई जाती है। किसमें वो आ करके पतितों को पावन बनाता है, वो कोई ने भागीरथ कह दिया, कोई ने बैल नंदीगण कह दिया। ये तो भूल है। बाबा ही बतावे कि मैं कौन–से भाग्यशाली रथ में आता हूँ। बाप (ने) आ करके बताया है कि मैं आ करके ब्रह्मा के रथ में प्रवेश कर ब्रह्मा द्वारा फिर भारत को सो देवी देवता धर्म वाला बनाता हूँ; क्योंकि जानते तो हो ना (कि) लक्ष्मी–नारायण का राज्य था। हे भारतवासियों, तुम सब बच्चे आदि सनातन देवी–देवता धर्म के थे। तुम बच्चे स्वर्गवासी थे। स्वर्ग को याद करते हो ना, जिसमें तुम्हारा राधे–कृष्ण राज्य करके गया हैं। सिर्फ राधे–कृष्ण तो नहीं था ना, लक्ष्मी–नारायण तो नहीं था ना। नहीं, तुम भी थे। जो भी तुम भारतवासी हो, तुम भी आदि सनातन देवी–देवता धर्म के थे। तुम सभी यहाँ सतयुग में, बाप बताते हैं मैं जब 5000 वर्ष पहले आया था तो तुम सभी को सतोप्रधान स्वर्ग के मालिक देवी–देवता बनाया था। अभी याद करो कि 5000 वर्ष पहले आया था। हर 5000 वर्ष पहले समान...मैं आता हूँ तुमको फिर से सो देवी–देवता धर्म में लाने के लिए; क्योंकि तुम थे, फिर देवी–देवता धर्म से तुमने 84 जन्म लिए। अच्छा, कैसे लिए? तुम पहले सतोप्रधान देवी–देवता थे। पीछे पुनर्जन्म लेना पड़े ना। ...देखो, बाबा बिल्कुल सीधा बताते हैं भारतवासियों को। भारतवासियों का धर्म ही है आदि सनातन देवी–देवता धर्म। तुम स्वर्गवासी थे। अभी नर्कवासी कैसे बनो? 84 जन्म तुमको ही लेना पड़ा। सतोप्रधान थे, सुखी थे, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी थे, हे भारतवासियों! तुमने ये जयन्ती मनाई ना। ...जब आएगा, बैठकर सिखलाएगा, समय तो लगेगा ना। तुमने दिखलाया कि बरोबर तीसवीं जयन्ती हमने शिवबाबा की पधरामणी की। अभी शिवबाबा को पधरामणी तो हुई, फिर ब्रह्मा,विष्णु,शंकर की भी साथ में पधरामणी चाहिए; क्योंकि उस त्रिमूर्ति की, जिसके लिए मनाते हैं त्रिमूर्ति ब्रह्मा, उनकी कोई जयन्ती नहीं दिखलाते हैं। तो उनकी ज़रूर दिखलानी पड़े; क्योंकि बाबा कहते हैं कि मैं आता हूँ, ब्रह्मा द्वारा स्थापना फट से शुरू करता जाता हूँ। ब्राह्मण बनाता जाता हूँ। तो इनका भी जन्म हो गया, ब्रह्मा का और ब्रह्मावंशियों का। अच्छा, फिर इनको हम दिखलाता हूँ कि तुम सो विष्णुपुरी के मालिक बनेंगे यानी लक्ष्मी–नारायण की राजधानी बनेगी। फिर जब यहाँ राजधानी बन जाएगी, जब तुम तमोप्रधान से, सतोप्रधान से जो तुम तमोप्रधान बने हो, खाद पड़ी है, वो खाद निकलेगी कैसे? योगाग्नि से। योग भी नहीं कहो, याद। भले भारत का प्राचीन योग बरोबर बहुत मशहूर है ; परन्तु सिखलाया किसने फिर ? वो कोई नहीं जानते हैं। एक ही बाप सिखलाते हैं। वो खुद कहते हैं कि हे बच्चों! अभी तुम अपने बाप को याद करो, और कोई को नहीं याद करो; क्योंकि वर्सा तुम बच्चों को मेरे से मिलना है। मैं बाप हूँ तुम्हारा। यहाँ आया हूँ। 30 वर्ष हुआ है और मैं यहाँ कल्प–2 आता हूँ। आ करके तुमको मनुष्य से देवता बनाता हूँ, देवी–देवता धर्म वाला बनाता हूँ। गायन भी है, बनाता हूँ; क्यों(कि) तुम देवी–देवता थे, फिर 84 जन्म ले करके पतित बने, असुर बने, ऐसे कहा जाता है.... असुर की मत पर, रावण की मत पर तुम चल पड़े। जो भी ये शास्त्र वगैरह बने हुए हैं, सभी हैं रावण की मत पर चले हुए, आसुरी मत पर चले हुए। इसको कहा जाता है ईश्वरीय मत। ईश्वरीय मत से तो ज़रूर तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे, जो अभी कोशिश कर

रहे हो। आया है, आया था, फिर अभी भी तो भगाने वाला आएगा ना। बाप बैठकर समझाते हैं– कृष्ण भगाने वाला नहीं था, जो तुम समझते हो। तुम कहते थे– कृष्ण भगा करके और पटरानियाँ बनाते थे। कहाँ की? अच्छा, पटरानियाँ बनाते थे तो उनकी निंदा क्यों होनी चाहिए? इतनी को पटरानियाँ कैसे बनाएँगे! तो देखो, गालियाँ दे दी हैं ना (कि) उनको भी इतनी 108 रानियाँ थीं भगाके–2। तो वो बात रॉंग है। बाप कहते हैं कृष्ण आया ही नहीं है जो इसकी कहानी सुनाई है कि मक्खन चोर फलाना। वो बात एक भी सत्य नहीं है। सभी झूठ तो मिरई झूठ। उनके ऊपर कोई कलंक नहीं लग सकता है, न कोई के पास जाकर चोरी करते थे। अपना घर महल छोड़ करके वो बाहर कहाँ जा सकते हैं! समझते हो, राजकुमार था अपने बड़े महलों का। ये सभी दंत कथाएँ हैं कि मटकियाँ चुराते थे, हरण करते थे, मटकियाँ फोड़ते थे। सभी हैं दंत कथा भक्तिमार्ग की दुर्गति में जाने के लिए। दुर्गति भी क्यों? ग्लानि करते हैं। तो जो ग्लानि करते हैं तो उनकी दुर्गति होगी ना। पाप हुआ ना। तो देखो, दुर्गतियाँ करते–2 इनकी, रामचंद्र की, सीता की, कृष्ण की, फलाने की ये गालियाँ देते–2, पढ़ते–2 और जन्म–ब–जन्म गालियाँ देते रहते हो, जन्म–ब–जन्म ये कथाएँ सुनते रहते हो। फिर रोज़ कथाएँ सुनते रहते हो। तो देखो, कितना पाप तुम्हारे ऊपर चढ़ गया है। भक्तिमार्ग में तुम पापात्मा कैसे बने, सो बाप बैठकर समझाते हैं। फिर पुण्यात्मा कैसे बनते हो, सो बाप बैठ करके बच्चों को समझाते हैं। समझाते हैं कि बच्चे, मैं कल्प पहले भी आया था। जो पास्ट हुआ सिंध से ले करके यहाँ तक वो कल्प–2 होता ही रहता है और होता ही रहेगा। फिर भी आएँगे। बाबा इसमें प्रवेश करेंगे। कलकत्ते में आ करके प्रवेश करेंगे। इनको सब कुछ छुड़ाएँगे। फिर इन सबकी परवरिश करेंगे, जैसे की। वहाँ पाकिस्तान में की ना सब मिल करके। ये फिर वही होगा। अभी सिर्फ वही नहीं होगा। ऐसे समझो कि सतयुग में हम देवी–देवताएँ थे, पवित्र थे, पीछे त्रेता में भी हम ही थे; क्योंकि हम भारतवासियों को 84 जन्म लेना पड़ा। यहाँ गाया जाता है। 84 जन्म तो ज़रूर पहला जन्म सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सबका बहुत अच्छा था। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। ज़रूर नंबरवार थे। सब तो राजा–रानियाँ नहीं बन सकती हो ना। सब साहूकार नहीं बन सकते हैं ना। साहूकार–गरीब वगैरह–2 ऐसे होते हैं ज़रूर। बाप बैठ करके बहुत अच्छी तरह से समझाते हैं कि हे भारतवासियों! तुम देवी–देवता धर्म वाले थे, पीछे सतयुग और त्रेता में तुमने 8 जन्म, 12 जन्म लिए। 84 जन्म का भी हिसाब चाहिए ना। अच्छा, ऐसे ही अपन को समझो कि हमने पार्ट धरा यहाँ सतयुग में देवी–देवता राजधानी में, पीछे हमने पार्ट धरा त्रेता में रामराज्य में, क्षत्रिय धर्म में, फिर हम आए और नीचे, रावण के राज्य में विकारी बनने, वाममार्ग में गए। तो फिर बरोबर हम 21 जन्म द्वापर में रहे। 84 जन्म चाहिए ना। बाबा कहते हैं ना– तुम अपने 84 जन्मों को नहीं जानते हो। तुम भारतवासियों ने ही 84 जन्म पूरे षुरू से ले करके अंत तक। दूसरा कोई भी धर्म वाले 84 जन्म नहीं लेते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे गुरूनानक का ये सिक्ख। नहीं। वो गुरू नानक आया, 500 वर्ष हुआ। उसका बहुत–2 करके 12/14 जन्म होंगे, 84 नहीं। वैसे हिसाब करें धर्म कब स्थापन हुआ। वहाँ से भेंट .. ये हिसाब है ना। जबकि इनका 84 जन्म 5000 वर्ष में, तो फिर जो 2000, 500, 1200 वो कितना जन्म हुआ? ये हिसाब हुआ ना। यह हिसाब भी तो बहुत सहज है समझने का। अभी एक्यूरेट नहीं निकालना है...कि इतना–2 समय में। भई, क्रिश्चयन लोग ने 2000 वर्ष में बेशक साठ एक जन्म...लिया होगा, पुनर्जन्म। वृद्धि होती जाती है, पुनर्जन्म होते जाते हैं। अच्छा, अब तुम बच्चे दिल में अच्छी तरह से ये ख्याल करो सतयुग,त्रेता,द्वापर और कलहयुग– इनमें हमने 84 जन्म भोगा। अभी सारा झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पाता है। फिर बाबा कहते हैं मैं आता हूँ यहाँ इस साधारण बूढ़े तन में। ये ड्रामा में नूँध है। इसमें कोई फर्क नहीं पड़ेगा। जो पास्ट हुई है सतयुग से ले करके इस समय तक वो ड्रामा है। जो बना है वो बनता ही, चलता ही रहता है, रिपीट होता ही रहेगा। अभी तुमको बेहद की हिस्ट्री में ले आते हैं। ये भी समझाते हैं कि भक्तिमार्ग में अंधश्रद्धा का(से) गुड्डियों की पूजा होती है। ब्लाइण्ड फेथ से भक्ति करते हैं। किसको भी नहीं जानते हैं। भले शिव के मंदिर बनाते हैं; परन्तु उनको मालूम नहीं है। कौन पूजा करते हैं? वही लक्ष्मी–नारायण पुजारी बनते हैं। शिव की पूजा क्यों करते हैं?

उनको ये मालूम नहीं है कि शिव से हम सतयुग के श्री लक्ष्मी–नारायण बने थे। वो उनको मालूम नहीं पड़ता है। भक्ति शुरू हो जाती है। शुरू से ही यहाँ ब्लाइण्ड फेथ यानी ये भक्तिमार्ग है ही ऐसा। जिनकी पूजा करता था लक्ष्मी–नारायण, भिन्न नाम–रूप में। पुजारी बने ना। अच्छा, पुजारी में भी तो राजघराने के होते हैं ना। तो जिसने पहले–2 मंदिर बनाया वो पहले–2 लक्ष्मी–नारायण था। वो जब पूज्य से पुजारी बने, तो उन्होंने पहले शुरू किया ये सोमनाथ का मंदिर बनाने। .... भी थे, जो वाममार्ग में आए। तो बहुत बनाया और बहुत धन था, ढेर था, और फिर तुम लोग भी तो थे ना। ...तुम भी चलते आए हो, पुनर्जन्म लेते आए हो। अभी तुमने 84 जन्म पूरा किया है तब बाबा आया हुआ है। आ करके तुम्हारे 84 जन्म की सारी हिस्ट्री–जॉग्रफी समझाते हैं। अभी ये समझो हम हैं एक्टर्स। आत्माएँ एक्टर्स हैं। हमारा घर है शांतिधाम या निर्वाणधाम। वहाँ शांति रहती है। अच्छा, आत्मा का स्वरूप क्या है? कहाँ रहता है? बोलते हैं बिन्दी। वहाँ जैसे कि...का झाड़ है। उसमें डीटी, इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन इत्यादि–2 का, ये रुद्र हैं ना, उनका जैसे कि झाड़ है। यानी दूसरा झाड़ है। आत्माओं का झाड़ है। बाप बैठकर समझाते हैं। तुमको आ करके यहाँ राय देते हैं कि हे सभी बच्चों! मुझे याद करो। क्या होगा? तुम्हारा विकर्म विनाश होगा। एक ही उपाय है; क्योंकि मुझे बुलाते हैं ना– पतित–पावन आओ। तो मैं तुमको कैसे कहूँगा कि गंगा में स्नान करो! अरे! मैं पतित–पावन हूँ ना। योग सिखलाता हूँ। अभी योग तो... बहुत, भारत का प्राचीन योग। क्या हुआ था योग से? कोई जानता नहीं है। अभी तुमको योग सिखला रहा हूँ। कैसे? मेरे साथ योग रखो। मैं तुम आत्मा को कहता हूँ कि अपने घर से यानी बाप से योग रखो। उस योग से क्या होगा? तुम्हारा जो विकर्म है ना, बस वो भस्म होता जाएगा, खाद जल जाएगी। अभी जितना याद करेंगे उतनी तुम्हारी खाद जलती जाएगी। अभी याद की है मुख्य बात। 84 का तो समझा दिया और बाकी पतित पावन कैसे बनो? नॉलेज तो दे दिया सृष्टि का चक्कर, 84 जन्म तुम कैसे लेते हो। नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार, सभी राजे तो नहीं बनते हैं ना। बिल्कुल ही पवित्र थे, यथा राजा–रानी तथा प्रजा। अभी सभी पतित हैं, यथा राजा–रानी तथा प्रजा; क्योंकि बड़े ते बड़े थे राजा–रानी। साधु–संत कोई बड़े नहीं हुए। नहीं, वो तो गुरू लोग ..। पोजीशन तो उनका बड़ा है ना। तो बाप बैठकर समझाते हैं। आगे भी तुमको कहा था, उन्होंने कृष्ण का नाम डाल दिया है मन्मनाभव–मद्याजीभव; पर कृष्ण नहीं था। कृष्ण की आत्मा यानी ये जो नई थी, जो पुरानी बनी है ना। उसमें भी आत्मा बैठी है। उसमें मुख्य है कृष्ण की आत्मा, जो 84 जन्म...। वो आत्मा अभी पतित बैठी है। कहते हैं बहुत जन्म के अंत के जन्म के भी अंत में मैं इसके शरीर में प्रवेश करता हूँ। किसके? वही नारायण। फिर कृष्ण पहले हैं, नारायण तो बाद में लेते हैं और उसको कहा जाता है भाग्यशाली रथ, बरोबर हुआ ना, जिसमें मैं आकर प्रवेश करता हूँ। क्यों भाग्यशाली रथ है? यही तो भाग्यशाली हुआ ना जो फिर पढ़ करके पहले नंबर में जाता है। जैसे तुम सभी बनते हो भाग्यशाली, नंबरवार जो जितना पुरुषार्थ करते हैं; परन्तु मुख्य तो इनका नाम बताएँगे ना। तो तुमको भी फॉलो करना है और फॉलो कर रहे हो बरोबर। बाबा और कोई भी तकलीफ किसको नहीं देते हैं। हम भारतवासियों ने बरोबर 84 जन्म अभी पूरा किया। हम 84 जन्मों को जान गए। बाप ने आ करके बताया। आगे भी कहा था तुम अपने 84 जन्मों को नहीं जानते हो, हम तुमको बैठ करके समझाते हैं। तुम आदि सनातन देवी–देवता धर्म के थे। तुम हिन्दू धर्म के नहीं हो। क्यों तुमने हिन्दू धर्म कहलाया? कि तुम धर्म श्रेष्ठ और कर्म श्रेष्ठ थे, पीछे रावण आया तो धर्मभ्रष्ट और कर्मभ्रष्ट हो गए। अपन को देवी–देवता कहलाने से लज्जा आती थी, शर्म आता था; इसलिए तुमने हिन्दू नाम रखा। .....अभी हो वास्तव में तुम वही, कोई हिन्दू नहीं हो। तुम आदि सनातन देवी–देवता धर्म के ही हो और तुमने 84 जन्म भोगा है। क्यों हिन्दू कहते हो? क्योंकि तुम पतित बन गए थे। अभी हो तुम। यहाँ कोई दूसरा भारतवासी नहीं है। अभी तुम सभी भारतवासियों के लिए है...। जाना सबको है; परन्तु पहले तुम भारतवासियों को जाना है ज़रूर; क्योंकि आना भी फिर भारतवासी देवी–देवताओं को पहले है। तो पहले तुम जाएँगे। .....देखो, ये बरात है। यह शिवबाबा आते हैं। सभी का बाप है। फादर भी कह देते हैं। पहले तो सजनियाँ छी–2, तमोप्रधान हो गई हैं तो उनको गुल–2 करेंगे। तभी तो

इन सजनियों को साजन ले जाएँगे वा जो आत्माएँ पतित बन गई हैं, उनको पावन बनाकर साथ में ले जाएँगे, जिसको कहा जाता है लिबरेटर, गाइड। दुःख से छुड़ाय फिर हमको शांतिधाम में ले जाते हैं। कौन? बाबा। कौन–सा बाबा? बेहद का बाबा। उनका नाम क्या है? शिवबाबा। उनका शिवबाबा ही नाम है। तुम आत्माओं को सिर्फ आत्मा–2 कहा जाता है। तुम्हारा नाम शरीर पर पड़ता है। उस बाबा का शिव नाम है। उनका शरीर का नाम पड़ता ही नहीं है। अभी ये तो समझ गए ना। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर को भी सूक्ष्म शरीर हैं, जो दिखलाते हैं। बाकी इनको स्थूल शरीर है। शिवबाबा के इतने नाम हैं सिवाय एक शिवबाबा के। तभी इनको कहा जाता है परम–आत्मा। वो आ करके तुम बच्चों को...। "हे बाबा!" भगवान को पुकारते हैं ना। हे मात–पिता! हम अभी बालक बने हैं। अभी तुम जानते हो कि तुम कहते हो बालक बने हैं। दूसरे पुकारते हैं– तुम मात–पिता, हम बालक तेरे; क्योंकि उनको पता ही नहीं है। सबको तो झट पता नहीं लगेगा ना। सबको पता लग जावे तो तुम यहाँ से पता नहीं क्या हो जावे! सिर्फ भोग लगाया..... सो भी कोई जानते नहीं हैं। .... अगर सबको मालूम पड़े तो पता नहीं क्या हो जावे! ऐसे कायदा नहीं है यहाँ। धीरे–2, क्यों? झाड़ जो सैपलिंग लगना है ना, ये कलम लगता है। कौन–सा कलम लगता है? सबसे मीठा झाड़ कौन था? उसमें देवी–देवताओं को सुख कितना था! सबसे जास्ती सुख तुम बच्चों को था। अभी तो जानते हो कि वर्थ कौड़ी बने हो और तुम हीरा थे। हीरा से कौड़ी बनने में तुम 84 जन्म लेंगे। कैसे? वो बाप (ने) अच्छी तरह से समझा दिया। अभी इस समय में तुम बच्चों को... मैं आत्मा हूँ। मैंने या भारतवासियों (ने) 84 जन्म पूरा किया है। हम जो भारतवासी ब्रदर्स हैं, फिर बहन–भाई, हमने 84 जन्म पूरा किया है। बाबा कहते हैं अब ये खेल पूरा होता है। फिर नए सिर शुरू होगा। वर्ल्ड की हिस्ट्री एण्ड जॉग्राफी फिर से रिपीट होगी। तो महिमा होती है ना। वर्ल्ड की हिस्ट्री और जॉग्राफी कौन–सी? फिर सतयुग से हिस्ट्री और जॉग्राफी देवी–देवताओं की शुरू होगी। शिवबाबा बैठकर समझाते हैं, जो फिर पीछे से स्थापना कर रहे हैं। अभी इसमें तुम बच्चों को तकलीफ क्या होती है। ये समझना। जानते हो ना कि 84 जन्म नहीं तो कौन भोगेंगे! 84 का चक्कर किसने लिया होगा? बच्चों ने। 84 लाख तो हो ही नहीं सकते हैं। बाबा थोड़े ही समझाया पीछे। तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो, हम बताता हूँ कि 84 लाख जन्म चुहे का, बिल्लियों का, कुत्तों का और गधों का बैठ करके बताएँगे! नहीं। ये देखो भूल है ना 84 जन्म। 84 जन्म होने के कारण ये जो गपोड़े मारते हैं कि सतयुग इतने लाखों वर्ष का था, त्रेता में हम इतना... बिल्कुल झूठ, कड़ी ते कड़ी झूठ। अभी भी कहते हैं– जाओ, शास्त्रवादियों से पूछो कलहयुग की कितनी वर्ष आयु होती है? देखो, क्या बकते हैं! झूठ बकेंगे ना। तो बाप कहते हैं– झूठी माया, झूठी काया, झूठा सब संसार; क्योंकि भारत अभी झूठखण्ड है। सचखण्ड में था तो तुम सदा सुखी थे। वहाँ तो फिर ...न गुरुओं की बात, न डॉक्टरों की बात, न बैरिस्टरों की बात। ये कोई वहाँ होते ही नहीं हैं; क्योंकि इस समय में तुम 21 जन्म का वर्सा लेते हो। ये तुम वर्सा लो, पुरुषार्थ करो, चाहे ...ये बन सकते हो और बनने वाले हो। डिनायस्टी है ना। आठ बादशाही है। चाहे तो इनके घराने में आओ, चाहे तो बड़े साहूकार बनो। .... तुम्हारे पुरुषार्थ के ऊपर। बाप समझाते हैं... ये जादू–वादू कुछ है नहीं। अगर जादू है तो क्यों नहीं है ? मनुष्य से देवता किये, इनसे अच्छा जादू कोई दूसरा होगा? ये तो अच्छा ही है ना और होता भी ऐसे ही (है)। बाप आते हैं, गाया जाता है कि मानुष ते देवता किये करत न लागी वार। किससे? .....तुम सेकेण्ड में जब यह जान जाते हो कि शिवबाबा के बच्चे बने। बाबा तो कल्प–2 आकर हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। बरोबर हुआ ना, तुम आधा कल्प भक्ति में भटके, कभी भी कोई स्वर्ग में तो.. नहीं गए। समझते हैं कि फलाना बाबा मरा, अम्मा मरी, फिर भी कोई भी स्वर्गवासी हुआ ही नहीं, जा ही नहीं सकते हैं। बाबा आय, अभी आ करके तुम बच्चों को लायक बनावे तभी स्वर्ग में आओ ना और फिर जब ये पुरानी धरनी खतम हो, महाभारी महाभारत की लड़ाई लगे; क्योंकि महाभारी महाभारत की लड़ाई थी और राजयोग सीखते थे। कौन सिखलाते थे? शिवबाबा कहते हैं मैं सिखलाता था। मैं शिक्षक हूँ। कृष्ण की पुरानी आत्मा, 84 जन्म में कहते हैं ना। फिर इनको कहते हैं ना– बहुत जन्म के अंत के जन्म का भी तुम्हारा अंत

जन्म है। पहले था ना। ...तुम भी थे। इसमें कोई मूँझों नहीं। ऐसे नहीं कोई समझे कि हम भी लड़ते हैं फलाना। नहीं, तुम भारतवासी हो ना। तुम्हारा धर्म सबसे ऊँचे ते ऊँचा। बहुत सुख का देने वाला। तुमने कभी देखा, कहाँ सुना कि सोने–हीरे के महल, जवाहर के महल। बैकुण्ठ नाम कितना बड़ा। क्या कोई इस्लामी या बौद्धी या क्रिश्चियन धर्म वाले कभी वैकुण्ठ में दिखलाएँगे क्या ? आएँगे ? नहीं, देख भी नहीं सकते हैं। बाबा कहते हैं बच्चे, तुम्हारा देवी–देवता धर्म बहुत सुख.. देने वाला है। अभी ऐसे नहीं हो सकता है कि दूसरा कहे कि.. भला..एक बारी तो हमको भी स्वर्ग में भेजो। नहीं, बोलते हैं ये ड्रामा बना हुआ है। बनी–बनाई बन रही, अब कुछ नई बननी नाय, जो फिर नई बने। एक भी आत्मा, कोई की भी, सारी दुनिया की है ना ये.....तो समझो कि ये जो भी आत्माएँ हैं ना, इन सबका (ड्रामा) बना हुआ है। इनमें न कोई कम आत्मा होती है, न जास्ती होती है। इनका बना–बनाया ड्रामा है। कब बना? नहीं, यह चलता ही आता है। ये अनादि चलता ही आता है। .... वो जो कोई कहे कि महाप्रलय होती है, पीछे एक बालक अगूँठा चूसते पीपल के पत्ते पर, अरे ये सभी राँग है। वर्ल्ड की हिस्ट्री और जॉग्राफी का चक्कर फिरता ही रहता है। ...तो देखो, कलहयुग के बाद संगमयुग तो छोटा है, फिर सतयुग है ही। छोटा दिखलाते हैं ये ब्राह्मणों की चोटी, ये छोटा युग। कितना फर्क है यहाँ। तुम ब्राह्मणों का युग छोटा है ना। बाप ब्राह्मणों को देवता बना रहे हैं; क्योंकि यज्ञ है ना इसमें, तो ब्रह्मा के बच्चे भी तो बनना पड़े ना। बरोबर हम ब्रह्मा के बच्चे हैं, वर्सा लेते हैं डाडे (से)। अब जब तलक ब्रह्माकुमार–कुमारी न समझें तब तलक डाडे का वर्सा कैसे मिले? फिर भी बाबा कहते हैं– अच्छा, वारिस न समझे, ज्ञान तो समझते हैं ना। ये तो ठीक है ना। अच्छा चलो, ब्राह्मण न समझो, तो भी ज्ञान तो सुनते हो ना। आ जाएंगे, फिर भी ज्ञान सुनते हैं ना, प्रजा में आ जाएँगे। साधारण प्रजा में भी आ जाएँगे। आना ज़रूर है। जितने सतयुग में थे और त्रेता में थे वो सभी यहाँ बनेंगे ज़रूर; क्योंकि बाबा कहते हैं परमात्मा ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण, देवी–देवता और क्षत्रिय धर्म की स्थापना करते हैं; क्योंकि दूसरा कोई भी शास्त्र है नहीं। संगम में ब्राह्मणों का, देवी–देवताओं का और क्षत्रियों का कोई दूसरा धर्म शास्त्र बतावे। नहीं, गीता का ये सर्वोत्तम धर्म शास्त्र, उनसे तीन धर्म स्थापन करते हैं। सो भी यहाँ करना होता है। इनको ब्राह्मण भी यहाँ बनना है और देवता भी यहाँ बनेंगे। वहाँ पहले जाकर राज्य करेंगे। बनाएँगे यहाँ। क्षत्रिय भी यहाँ बनाएँगे। ये सतयुग और त्रेता में कोई आता ही नहीं है जो किसको बनावें। तो ये आ करके तीन धर्म स्थापन करते हैं। दूसरे सभी जो आते हैं वो आपे ही अपना एक–2 धर्म स्थापन करते हैं। जब खुद आते हैं, एक आया क्राइस्ट, पीछे दो,चार,पाँच क्रिश्चियन होते–2 जब लाखों होते हैं ना तब वो अपनी राजधानी स्थापन कर लेते हैं। तुम्हारी राजधानी सतयुग में ...। ये कहाँ से आई?...संगमयुग पर राजधानी स्थापन हो रही है।.....फूल बन रहे हो। ये सैम्पलिंग लग रहा है। कौन–सा है..... वो जो भी देवी–देवताएँ थे, कल्प... वो आएँगे ज़रूर। आ करके अपना वर्सा बाप से ..लेंगे....। अभी सहज बात है ना। अच्छा, इनको टोली खिलाओ और दूसरा, कोई भी बच्चे आपस में, बाबा है ना, बाबा सौगातें भी देते हैं...– किसको क्या, किसको क्या। अच्छा, बाबा किसको लूंगी पहना देते हैं, किसको कौड़ी पहना देते हैं। चलो, ... इसमें भी कोई कल्याण है। ...ये बाबा देते हैं ना देवता से बच्चे के लिए। वैकुण्ठ तो तीरी पर लाया है; परन्तु आते हैं बाबा के पास, मिलते हैं। कुछ न कुछ बोले। अच्छा, सौगात देवें। अच्छा, ये रूमाल कहाँ से मिला? चलो, शिवबाबा याद आया। .....देखो, कितना अच्छा हो जाएगा। पाप कट जाएँगे ना। तो बाबा कहते हैं सौगात किसलिए दी जाती है? याद के लिए। यूँ याद न पड़े, तो अच्छा कोई चीज़ होगी ना, अरे शिवबाबा....। याद किया, तुम्हारा विकर्म विनाश हुआ। इसलिए बाबा कुछ–न–कुछ, चाहे कोई भी पाई की चीज़ हो...। अब ये किसने दिया? शिवबाबा ने दिया। इसको कहते हैं यादगार। जो यादगार मिलती है तो घर में शोकेश में रख देते हैं। फलाने ने ये दिया, फलाने ने ये दिया, है ना बरोबर। तो तुम ये रख दो इनके शोकेश में, ये जो तुमने शिवबाबा को याद किया ना, न याद करने वाले झट शिवबाबा को याद करेंगे। इसलिए तो बच्चों को बाबा हमेशा... कुछ–न–कुछ सौगात देते हैं। पीछे कोई भी दे तुम्हारे लिए वर्थ कौड़ी; परन्तु यादगार के लिए ....क्योंकि याद से ही तुम्हारा सारा

काम है। याद से ही तुम्हारा विकर्म विनाश (होगा)। शिवबाबा को याद करने से फिर तुमको वर्सा मिलेगा। तो याद है मुख्य। याद में रोला पड़ता है माया (का)। तुम याद करो, तूफान आएगा और याद तुम्हारी भुला देगा। और कोई तकलीफ नहीं और खुशी में भी रहेंगे, बाबा, शिवबाबा हमको वर्सा देने आया है 21 जन्म का। आत्मा कहती है– बाबा, ...हमको मालूम नहीं था कि ऐसा कोई वर्सा हम लेते हैं, गुमाते हैं। कमाल है बाबा! तो बरोबर आपकी महिमा करते हैं। तेरी गत–मत तुम ही जानो। तुम्हारी महिमा करते हैं– ज्ञान का सागर, सुख का सागर, लिबरेटर, दुःखहर्ता। बाबा, कोई को मालूम नहीं। बाबा, वण्डर है आपका ..! बस ये शिवबाबा से बात करते रहो; क्योंकि आत्मा हो और वो है तुम्हारा माशूक। तो बाबा बोलता है अभी माशूक से ऐसे बातें करो। वाह! आधा कल्प तुम माशूक को हम आशिकों ने याद किया। बच्चे बोलते हैं ना। अभी आप आ गए। आपसे हम पूरा वर्सा लेंगे। आधाकल्प के हम भटके हुए हैं। बाबा, हम आशिक आपके, माशूक के लिए आधा कल्प भटके हैं। अभी बाबा आप आ गए हैं। अभी हमको फिर सुख देते हो। बात करो। बात करने से ऐसे हिर जाएँगे ना ....बैठेंगे तभी भी आप आएंगे.....क्योंकि सवेरे में वायब्रेशन होता है ना, शुद्ध रहता है। रात को तो गंदे ही होते हैं और सुबह में उस समय में बैठ करके– बाबा, मैं आपका बच्चा हूँ। भक्तिमार्ग में मैं जैसे आपका आशिक बन गया। मैंने कितना धक्का खाया। ... हमने जन्म–जन्मांतर चार धाम किया। चारों तरफ ढूँढ़ा हूँ। बाबा, हम आपको पा नहीं सकें। ऐसे–2 हमसे मीठी–2 बातें करते रहें। ये आत्मा की ..। अभी यह परमात्मा .. बिगर कोई कर न.....। अच्छा, टोली खिलाओ बच्चों को। कोई भी समझ सके; परन्तु माया है ना, अभी तो यहाँ समझेंगे ... घरबार देखा, बाल–बच्चा.....ये भूल गई, वहाँ की वहाँ रही। जो अच्छी–2 तरह से धारण ...। बाबा सब नहीं कहते हैं। सब नंबरवार हैं। कोई तो अच्छी धारण करते हैं और फिर जा करके सुबह को बाप को याद करते हैं कि बाबा, आधा कल्प हम पूरे भटके हैं। अभी हमको आधाकल्प के लिए फिर आत्मा समझने का है। आप वंडरफुल हैं बाबा। बाबा, हम बहुतों को समझाएँगे, ये करेंगे, ये करेंगे। बाबा से बात करते रहो...। याद ऐसे कायदे से किया जाता है ना। बाकी जो तुम्हारा गुरू–गोसाईं फलाना है, उनकी बात ही... क्योंकि ये जानते हो कि बेहद का सन्यास है। ज्ञान, फिर भक्ति। फिर भक्ति में जब सन्यास करो सारी पुरानी दुनिया का तो फिर इस ज्ञान में आओ, फिर मालिक बनो। सन्यासी कहते भी ऐसे हैं– ज्ञान, भक्ति, सारी दुनिया का वैराग्य, न कि सन्यासियों का घरबार का हद का वैराग्य और जंगल में.. फिर आ गए अंदर। जंगल से कोई गया थोड़े ही ..... इनको आकर गुरू बनाया। उनको कोई हक है इनको गुरू बनाने का ? जिनको विधवा बनाया उनको गुरू बनाना! पहले तो जाओ, जिसको विधवा बनाया, उनका तो कल्याण करो। चैरिटी बिगन्स एट होम। तो तुम बच्चों को भी ऐसे ही, फिर यात्रा सिखलाओ। पर वो यात्रा सिखायी जाती है, मित्र–संबंधी...मिल करके पीछे जाते हैं यात्रा पर। आपस में बातचीत तुम करते रहो। ...से तो इतना कनेक्शन नहीं रहता है ना। तुम भी पहले–2 घरवालों को। बाप को याद करो। ये है रूहानी यात्रा और गाया भी जाता है वन्दे मातरम्। किसने गाया पहले? बाप। फिर दूसरे गाते जाएँगे। कौन–सी माताएँ? ये शिवशक्ति, शिवबाबा की पौत्री और पौत्रे .... शिवबाबा के तो सभी बच्चे हैं ना और फिर प्रजापिता ब्रह्मा के। बड़े बच्चे वाले हैं। ढेर के ढेर। ....अच्छा! अब ये बच्चों को नमस्ते भी करते हैं ; क्योंकि सर्वेन्ट होते हैं ना। तो जिसकी सर्विस करते हैं उसको तो नमस्ते करना पड़े। ये शिवबाबा को निराकारी, निरंहकारी भी गाया जाता है। बच्चों को सिखलाते हैं। अच्छा, अभी बाबा का ऑरगन खराब है। गुडमॉर्निंग।